राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 में शिक्षण विधियाँ
एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

रमन कनौजिया*
सुमित गंगवार**

भारत सरकार का लक्ष्य वर्ष 2030 तक संयुक्त राष्ट्र द्वारा संस्तुत सतत विकास एजेंडा के लक्ष्य 4 (एस.डी.जी. 4) में परिलक्षित सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्ता वाली शिक्षा को सुनिश्चित करना तथा जीवन-पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा देना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति तथा 21वीं सदी की नवीन आवश्यकताओं के अनुरूप भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को प्रस्तुत किया है। इस शिक्षा नीति के सिद्धांतों को वर्तमान विद्यालयी व्यवस्था में समाहित करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2022 में शिक्षा के बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का निर्माण किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य 3 से 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए शिक्षा व्यवस्था में व्यापक और सकारात्मक परिवर्तन तथा परिमार्जन करना है, ताकि उनके समग्र विकास की नींव रखी जा सके। इस शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 में वर्णित शिक्षण विधियों का अन्वेषण करना है। जिसके लिए शोधार्थी द्वारा इस दस्तावेज का विषयवस्तु विश्लेषण करने के उपरांत परिणाम के रूप में यह पाया गया कि इस दस्तावेज में बुनियादी स्तर के विद्यार्थियों के लिए खेल आधारित शिक्षण विधियों पर बल दिया गया है, जिसके अंतर्गत बातचीत, कहानी, खिलौने, गीत-संगीत, शारीरिक गतिविधियाँ, कला एवं शिल्प, इनडोर-आउटडोर खेल, प्रकृति से जुड़ाव और क्षेत्र भ्रमण जैसी गतिविधियों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। इन आनंदपूर्ण गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को सीखने के अवसर मिलते हैं तथा उनमें जिज्ञासा, रचनात्मकता और समस्या-समाधान जैसी क्षमताओं का विकास हो पाता है। इस शोध-पत्र के अध्ययन के उपरांत प्राथमिक स्तर पर कार्यरत अध्यापक कक्षागत एवं कक्षा के बाहर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में इन शिक्षण विधियों को समाहित करके एक ऐसे समावेशी, न्यायसंगत एवं विद्यार्थी केंद्रित वातावरण का निर्माण कर सकेंगे जहाँ पर प्रत्येक विद्यार्थी आनंदपूर्वक नवीन ज्ञान को सीख सके।

*पीएच.डी. शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, शिक्षा संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226 007
***सहायक आचार्य*, शिक्षाशास्त्र विभाग, शिक्षा संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226 007

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षा का लक्ष्य एक ऐसे व्यक्ति का निर्माण करना है, जो विवेकशील तर्कसंगत विचार तथा कर्म करने में सक्षम हो, जिसमें करुणा, समानुभूति, साहस, लचीलापन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा रचनात्मक कल्पनाशक्ति के साथ-साथ नैतिक मूल्यों का समावेश हो। इसका लक्ष्य हमारे संविधान द्वारा परिकल्पित न्यायसंगत, समावेशी और बहुलतावादी समाज के लिए संलग्न, उत्पादक और योगदान करने वाले नागरिकों को तैयार करना है। इस प्रकार यह शिक्षा नीति भारतीय लोकाचार/लोकनीति/मूल्यों पर आधारित ऐसी शिक्षा व्यवस्था के लिए दृष्टि देती है जो सभी को उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके भारत को एक न्यायसंगत और जीवंत ज्ञान समाज में सतत रूप से रूपांतरित करने के लिए प्रत्यक्ष रूप से योगदान करके इसे एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाने में सहायता प्रदान करती है (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, पृ.सं. 32)। इस शिक्षा नीति के आधारभूत सिद्धांत जैसे बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को सर्वोच्च प्राथमिकता, लचीलापन, बहुविषयक और समग्र शिक्षा, अवधारणात्मक समझ पर जोर, रचनात्मक आकलन, बहुभाषावाद और भाषा की शक्ति को बढ़ावा देना, विद्यार्थी केंद्रित दृष्टिकोण तथा भारतीय बुनियाद और गौरव इत्यादि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति में मार्गदर्शक का कार्य करते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यालयी शिक्षा की वर्तमान संरचना (10+2) में बदलाव करते हुए 3 से 18 वर्ष के सभी बच्चों के लिए पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्रीय आधार पर 5+3+3+4 प्रतिमान को अपनाने की संस्तुति करती है। इस नई विद्यालयी संरचना में प्रारंभ के पाँच वर्षों को 'बुनियादी स्तर' कहा गया है, जिसमें 3 से 8 वर्ष की आयु के बच्चों को शिक्षा प्रदान की जाएगी। चूँकि बच्चों के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास 6 वर्ष की उम्र तक हो जाता है। अतः बच्चे के विकास के प्रारंभिक वर्ष मस्तिष्क के स्वस्थ व सतत विकास और वृद्धि के लिए उनकी उपयुक्त देखभाल और उपयुक्त प्रोत्साहन के विशिष्ट महत्व को इंगित करते हैं (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, पृ.सं. 15)। इस बात को ध्यान में रखते हुए विद्यालयी शिक्षा के बुनियादी स्तर पर प्रारंभ के तीन वर्षों (3–6 वर्ष) के दौरान बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास को सुनिश्चित करने के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी. सी.ई.) की ठोस नींव रखी गई है, जबकि अगले दो वर्ष (6–8 वर्ष) प्राथमिक विद्यालय की कक्षा 1 और 2 के रूप में होते हैं, जिसमें बच्चों की प्रारंभिक भाषा, गणित और सामाजिक व्यवहार संबंधी क्षमताओं का विकास किया जाता है। इस प्रकार यह स्तर बच्चों के मस्तिष्क के विकास से लेकर विद्यालय की तैयारी तक समग्र विकास की आधारशिला है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधारभूत सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए विद्यालयी शिक्षा के बुनियादी स्तर के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 नामक

दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। इस दस्तावेज में शिक्षा को एक अधिक समग्र, बहुआयामी और लचीले रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास पर बल देता है। यह दस्तावेज विज्ञान, कला, खेल, भाषा, गणित, नैतिक शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा जैसे विषयों को समाहित करके कला और विज्ञान, अकादमिक और व्यावसायिक विषयों के बीच की खाई को दूर करने का प्रयास करता है तथा विद्यार्थियों में रचनात्मक, आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक सोच विकसित करने के साथ-साथ डिजिटल साक्षरता, सहयोग, संवाद कौशल और जीवनोपयोगी मूल्यों को भी विकसित करता है। इसके अतिरिक्त यह दस्तावेज भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की सक्रिय भागीदारी, गहन समझ, मूल्यों तथा जीवन कौशल की शिक्षा पर जोर देते हुए शिक्षा प्रणाली को अधिक व्यावहारिक, विद्यार्थी-केंद्रित और भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का आधार स्तंभ शिक्षा के माध्यम से 'पंचकोश' का विकास है। इसके अनुसार बालक का संपूर्ण विकास पाँच परतों अन्नमय कोश (शारीरिक परत), प्राणमय कोश (जीवनशक्ति ऊर्जा परत), मनोमय कोश (मन की परत), विज्ञानमय कोश (बौद्धिक परत) और आनंदमय कोश (आंतरिक स्व) से होता है (ओड़, 2021)। इस अर्थ में शिक्षा का लक्ष्य बालक के आंतरिक और बाह्य दोनों तरह के विकास को पोषित करना है। अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा बुनियादी— स्तर 2022 में पंचकोश की अवधारणा को पाठ्यचर्या उद्देश्यों के आधार के रूप में स्वीकार किया गया है। पाठ्यचर्या में 'पंचकोश' की अवधारणा का समावेश शिक्षा को केवल जानकारी तक सीमित नहीं रखता, बल्कि यह बालकों के शारीरिक, भावात्मक, बौद्धिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास में भी सहायक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में बुनियादी स्तर के लिए दिए गए मार्गदर्शक सिद्धांतों में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि प्रत्येक बच्चा सीखने में सक्षम होता है, चाहे उसकी पारिवारिक या सामाजिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो। बच्चे अपने अनुभवों से सीखते हैं और उनका विकास उनके अपने अनुभवों से होता है। वे अपने अनुभवों और परिवेश के साथ संवाद करते हुए अपनी समझ को विकसित करते हैं। अतः बच्चों के अनुभवों और उनकी सोच को उचित सम्मान मिलना चाहिए। साथ ही उनके सामाजिक, भावनात्मक और भाषायी विकास के लिए संवाद और अनुकरण को पाठ्यचर्या में उचित स्थान प्रदान करना चाहिए। इस अवस्था में बच्चे खेल के माध्यम से सीखते हैं अतः सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में अध्यापक खेल आधारित विभिन्न गतिविधियों का उपयोग कर सकते हैं। खेल आधारित गतिविधियों के माध्यम से बच्चे अपने और आस-पास के वातावरण के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं (गंगवार और कुमार, 2022)। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक और अर्थपूर्ण अनुभव, वातावरण से जुड़ाव, नवीनता तथा चुनौतियाँ बच्चों की जिज्ञासा

और अनुभव आधारित सोच को प्रोत्साहित करती हैं। अतः शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में विविधता, समावेशन, जेंडर-संवेदनशीलता तथा परिवार और समुदाय की भागीदारी को महत्व प्रदान किया जाना चाहिए (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022)। ई.सी.सी.ई. इस चरण की शिक्षा का एक केंद्र बिंदु है, जिसमें अध्यापकों की संवेदनशीलता और बच्चों की भावनात्मक आवश्यकताओं को प्राथमिकता दी जाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत में ई.सी.सी.ई. के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। ई.सी.सी.ई. आदर्श रूप से लचीली, बहुआयामी, बहुस्तरीय, खेल आधारित गतिविधि आधारित, और खोज आधारित शिक्षा पर आधारित है। यह पद्धति बच्चों को वर्णमाला, भाषा, संख्याएँ, रंग, आकृतियाँ, खेल, पहेलियाँ, तार्किक सोच, समस्या-समाधान तथा चित्रकला जैसे विभिन्न विषयों से परिचित कराकर उनके विकास को बढ़ावा देती है (मेइती और अन्य, 2024)।

शोध लेख का उद्देश्य एवं अध्ययन प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध लेख का उद्देश्य राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 में नवाचारी शिक्षण विधियों का विश्लेषण करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 के दस्तावेज का विषयवस्तु विश्लेषण किया गया है। विषयवस्तु विश्लेषण अनुसंधान की वह प्रविधि है जिसके माध्यम से किसी प्रलेख (दस्तावेज) में निहित विशेषताओं का पूर्व निर्धारित प्रसंगों के आधार पर क्रमबद्ध एवं वस्तुनिष्ठ तरीके से अध्ययन करके निष्कर्षों तक पहुँचा जाता है (श्रीवास्तव और आनंद, 2022)।

अध्ययन के निष्कर्ष

इस शोध लेख में निर्धारित उद्देश्य के अनुसार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 के दस्तावेज का विषयवस्तु विश्लेषण करने के उपरांत निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए—

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 द्वारा संस्तुत शिक्षण विधियाँ

विद्यालयी शिक्षा के बुनियादी स्तर में बच्चे स्वाभाविक रूप से जिज्ञासु, रचनात्मक और सक्रिय अधिगमकर्ता होते हैं। वे खेल-खेल में और गतिविधियों के माध्यम से स्वयं करके बेहतर ढंग से सीखते हैं। वे प्रश्न करते हैं, सोचते हैं, कारण खोजते हैं और प्रयोग के माध्यम से प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करते हैं। इस अवस्था में उनका सीखना एक संवादात्मक प्रक्रिया के रूप में होता है, जहाँ वे अपने अनुभव, संवेदना और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करते हैं। खेलों के माध्यम से उनकी सृजनात्मकता, कल्पनाशक्ति, भाषा और समस्या-समाधान क्षमता का विकास होता है। बच्चों की स्वाभाविक जिज्ञासा, आनंद, और सहभागिता उनके शारीरिक व मानसिक विकास के लिए इस स्तर पर अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार, यह स्तर बच्चों के समग्र विकास और शिक्षा की नींव मजबूत करने का कार्य करता है (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, पृ.सं. 39)। अतः इस आयु वर्ग के प्रत्येक बच्चे के लिए कक्षा-कक्ष एक समावेशी,

सीखने के लिए एक अनुकूल वातावरण वाला होना चाहिए जो प्रत्येक बच्चे को स्वतंत्रता, खुलापन, स्वीकृति, सार्थकता, अपनापन और चुनौती प्रदान करे (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, पृ. सं. 128)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने समावेशी शिक्षा की एक सशक्त आधारशिला रखी है। यह नीति शिक्षा प्रणाली में व्याप्त मौजूदा चुनौतियों को दूर करने तथा यह सुनिश्चित करने का प्रयास करती है कि कोई भी विद्यार्थी पीछे न रह जाए (दत्ता और दोवारह, 2025)। बच्चों का सतत मूल्यांकन, जो पूर्व-प्राथमिक और आँगनवाड़ी कार्यक्रमों का एक अनिवार्य हिस्सा है, विकास संबंधी विलंब या कठिनाइयों की प्रारंभिक पहचान में सहायक सिद्ध होता है। इससे बच्चों को समय रहते सहारा और संसाधन उपलब्ध कराए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 के अंतर्गत यह सुनिश्चित किया गया है कि विद्यालयों को अधिक लोकतांत्रिक और सहभागी रूप में संचालित किया जाए। इसमें माता-पिता और स्थानीय समुदाय को विद्यालय की गतिविधियों, निर्णय प्रक्रिया और बच्चों की शिक्षा में भागीदारी के अवसर दिए जाते हैं, ताकि शिक्षा प्रणाली अधिक समावेशी और उत्तरदायी बन सके (*इन्क्लूजन इन एजुकेशन— ए मैनुअल फॉर स्कूल मैनेजमेंट कमेटी*, 2020, पृ.सं. 5)। उपर्युक्त वर्णित सुझावों के आलोक में विद्यालयी शिक्षा के बुनियादी चरण में अधिगम प्रक्रिया को समावेशी एवं अधिक प्रभावी बनाने के उद्देश्य से नवीन शिक्षणशास्त्रीय पद्धतियों को अपनाने की आवश्यकता महसूस होती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर, 2022, एक व्यापक और विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षणशास्त्र की संस्तुति करती है, जो बच्चों के समग्र विकास और सीखने की सहज प्रकृति पर केंद्रित है। जिसमें खेल आधारित दृष्टिकोणों और विशिष्ट विषय-क्षेत्र रणनीतियों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

खेल आधारित शिक्षा

पूर्व-प्राथमिक स्तर की पाठ्यचर्या में परंपरागत विषयों के स्थान पर व्यावहारिक क्रियाएँ विशेष महत्व रखती हैं। अतः बच्चों के शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, सृजनात्मक तथा भाषायी विकास के लिए विभिन्न प्रकार की खेल सामाग्री की भी आवश्यकता होती है (यादव, 2023)। जब बच्चे खेलते हैं तो वे न केवल आनंद का अनुभव करते हैं, बल्कि अपनी कल्पना का उपयोग कर अपनी पसंद और नियम भी तय करते हैं। खेल के दौरान वे अपने आस-पास की दुनिया पर ध्यान केंद्रित करते हैं और नई चीजें सीखते हैं। यह एक समग्र सामाजिक गतिविधि है जो बच्चों को दुनिया को समझने, समस्याओं को हल करने, आत्मनिर्भर बनने और दूसरों के साथ सहयोग करने जैसे महत्वपूर्ण कौशल विकसित करने में मदद करती है। खेल-खेल में ही बच्चे अनजाने में गणित, भाषा, योजना बनाना, तार्किक सोच और सामाजिक समझौते जैसी बातें सीखते हैं, जो उनके सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। इस प्रकार खेल-सीखने की गतिविधियों का एक आदर्श माध्यम है। शिक्षाविदों ने भी शिक्षण और सीखने की गतिविधियों में खेल

के उपयोग की सिफारिश की है। खेल पद्धति बच्चों को अपने तरीके से ज्ञान अर्जित करने की, समझने की और उसे आत्मसात करने की स्वतंत्रता देती है (तेवतिया, 2023)।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 'खेल' को बच्चों के सीखने और विकास के केंद्र में रखती है। यह खेल को केवल मनोरंजन के साधन के रूप में नहीं, बल्कि एक सुनियोजित शैक्षिक उपकरण के रूप में भी देखती है। खेलना बच्चों के लिए केवल एक गतिविधि नहीं बल्कि एक स्वाभाविक आवश्यकता है, जिससे वे स्वाभाविक रूप से सीखते हैं। बच्चों की प्रकृति ही ऐसी होती है कि वे खेल के माध्यम से चीजों को समझते और सीखते हैं। खेल बच्चों को सक्रिय रखता है और उनके सोचने, अनुभव करने, सामाजिक संबंध बनाने और समस्याओं को हल करने की क्षमताओं को विकसित करता है। यह उन्हें स्व-अनुशासन, सामाजिक जुड़ाव और सहभागिता के अवसर प्रदान करता है। इस प्रक्रिया में वे न केवल स्वयं से, बल्कि दूसरों से और अपने परिवेश से भी सीखते हैं। खेल बच्चों को सीखने के लिए एक मुक्त, आनंददायक और सार्थक माहौल प्रदान करता है, जो उनके शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास में सहायक होता है। इस प्रकार, खेल बच्चों के लिए आवश्यक सभी शर्तों को पूरा करता है और उनकी शिक्षा का एक अभिन्न हिस्सा बनता है। इस प्रकार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 खेल के महत्व को उजागर करती है। इसके अनुसार पाठ्यचर्या, शिक्षणशास्त्र, समय और विषयवस्तु को व्यवस्थित करने और बच्चे के संपूर्ण अनुभव के लिए कक्षा में जिन अवधारणात्मक और प्रक्रियात्मक अभ्यासों को अपनाया जाता है उसमें खेल की मुख्य भूमिका होती है (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, पृ.सं. 41)।

खेल आधारित अधिगम के विभिन्न प्रकार और उनकी शैक्षणिक भूमिकाएँ

ई.सी.सी.ई. के संदर्भ में 'खेल' शब्द के अंतर्गत उन सभी गतिविधियों को सम्मिलित किया जा सकता है जो बच्चों के लिए मजेदार और उन्हें व्यस्त रखने वाली हैं। इनमें शारीरिक खेल, अनौपचारिक बातचीत, प्रश्न और उत्तर करना, कहानी सुनाना और सीखने-सीखाने से जुड़ी अन्य गतिविधियाँ भी शामिल हैं (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, पृ.सं. 41)। खेल बच्चों को सक्रिय और प्रेरणादायक रूप से सीखने के अवसर प्रदान करती है और इसे विभिन्न तरीके से व्यवस्थित किया जा सकता है—

मुक्त या स्वतंत्र खेल

इस प्रकार के खेल के अंतर्गत बच्चे स्वयं ही यह तय करते हैं कि उन्हें क्या खेलना है और कितनी देर तक खेलना है तथा वे स्वयं ही इसे निर्देशित भी करते हैं। इसमें अध्यापक की भूमिका अप्रत्यक्ष होती है। वे केवल खेल के लिए परिस्थितियाँ निर्मित करते हैं, बच्चों का अवलोकन करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर उनकी मदद भी करते हैं। इस प्रकार का खेल बच्चों को सामाजिक और आत्म-नियमन के कौशल विकसित करने में मददगार होता है। इसके अंतर्गत खिलौनों से खेलना, पहेलियों को हल करना,

सहपाठियों के साथ भूमिका निर्वहन करना तथा उनके साथ पुस्तकें पढ़ने जैसी गतिविधियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

मार्गदर्शित खेल

इस प्रकार के खेल में बच्चे गतिविधि का स्वयं नेतृत्व कहते हैं, लेकिन वयस्क सक्रिय रूप से खेल गतिविधि को सुगम बनाने में सहायता प्रदान करते हैं। इसमें अध्यापक एक विशिष्ट उद्देश्य के साथ जुड़ते हैं जैसे बच्चों में सूक्ष्म-गतिक कौशल और कल्पना को विकसित करना। विकास के सभी आयामों से संबंधित कौशलों के विकास के लिए मार्गदर्शित खेल सबसे प्रभावी माना जाता है, क्योंकि यह बच्चों और अध्यापकों दोनों को एक साथ मिलकर सीखने का अवसर प्रदान करता है। इस प्रकार बाल्यावस्था में मार्गदर्शित खेल को सबसे प्रभावी माना जा सकता है, क्योंकि यह सीखने के विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति तथा बाल-केंद्रित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने के लिए अध्यापक द्वारा सौम्य और सक्रिय संबलन पर बल देता है। इस प्रकार के खेल के अंतर्गत स्मृति आधारित खेल, कला एवं शिल्प तथा संगीत एवं नृत्य आदि गतिविधियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

संरचित/निर्देशित खेल

इस प्रकार के खेल के अंतर्गत अध्यापक द्वारा निर्देशित गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं, जो आनंददायक होती हैं तथा जिनमें कुछ खास नियम और दिशानिर्देश होते हैं। बुनियादी स्तर में विशिष्ट दक्षता और सीखने के प्रतिफलों पर ध्यान केंद्रित करने की दृष्टि से संरचित खेल काफी महत्वपूर्ण होते हैं। अध्यापक ऐसे खेलों और गतिविधियों जिनमें कुछ खास नियम और दिशानिर्देश होते हैं, उनके माध्यम से सीखने के लिए आनंददायक अनुभवों की योजना बनाते हैं। इस प्रकार के खेल के अंतर्गत निर्देशित बातचीत, कहानी कहना, कविताएँ गाना तथा क्षेत्र-भ्रमण जैसी गतिविधियों को सम्मिलित किया जा सकता है। इस प्रकार खेल आधारित अधिगम शिक्षण का एक ऐसा तरीका है जिसमें वयस्कों के मार्गदर्शन और समर्थन के साथ-साथ हँसी-खेल और बच्चों पर केंद्रित तत्व शामिल होते हैं। यह बच्चों के लिए सीखने के विभिन्न स्तरों को समझने में अध्यापकों की भूमिका को रेखांकित करता है। इस सीखने के क्रम में, बाल-निर्देशित और अध्यापक-निर्देशित दोनों तरह की मजेदार गतिविधियाँ शामिल हो सकती हैं, जो बच्चों को सीखने में मदद करती हैं। बुनियादी स्तर (कक्षा 1 और 2) में, बच्चों को प्रत्येक वर्ष सभी प्रकार के खेल-खेलने के समान अवसर मिलने चाहिए।

खेल के माध्यम से सीखने के विभिन्न तरीके

बाल्यावस्था में बच्चे विभिन्न प्रकार के खेलों और आनंददायक गतिविधियों के माध्यम से सीखते हैं जैसे बातचीत करना, खिलौनों से खेलना, चित्रकला, गायन तथा नृत्य आदि। एक अध्यापक बच्चों के साथ जुड़ने तथा उन्हें अधिगम प्रक्रिया में समायोजित करने की दृष्टि से इन सभी तरीकों को अपना सकता है। खेल के माध्यम से सीखने के विभिन्न तरीकों का विस्तृत वर्णन इस प्रकार है—

बातचीत

बाल्यावस्था में बच्चों में भाषा का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि भाषा के माध्यम से ही बच्चे एक दूसरे से जुड़ते हैं, अपनी समझ को विकसित करते हैं तथा सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने की क्षमता का विकास करते हैं। अतः अध्यापक को इस आयु वर्ग के बच्चों के भाषायी विकास के लिए उपयुक्त रणनीतियों को अपनाना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। बच्चों में आस-पास के लोगों और चीजों से जुड़ने के लिए बातचीत जरूरी होती है। कक्षा में बच्चों के साथ निरंतर बातचीत विश्वासपूर्ण संबंध बनाने में मदद करती है (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, पृ.सं. 94)। इसके लिए अध्यापक कक्षा में खुली एवं नियोजित दोनों प्रकार की बातचीत आधारित गतिविधियों को बढ़ावा दे सकते हैं। इसके लिए अध्यापक 'सर्कल टाइम सेशन' (जिसमें सभी बच्चे अध्यापक के साथ एक घेरे में बैठकर बातचीत करते हैं) तथा 'दिखाओ और बताओ सत्र' (जिसमें बच्चे और अध्यापक अपने पसंदीदा खेल, मूल कहानियाँ तथा निजी किस्से आदि को सम्मिलित कर उन पर चर्चा करते हैं) जैसी गतिविधियों को बढ़ावा दे सकते हैं। कक्षा में कविता, कहानी और चित्र आदि के माध्यम से बातचीत द्वारा बच्चों को किसी विषय पर तर्क-वितर्क करने के मौके प्रदान करने चाहिए, जिससे उनकी मान्यतओं को चुनौती मिले, वे सही-गलत का निर्णय करने में सक्षम हो पाएँ और संवैधानिक मूल्यों को समझने की कोशिश कर पाएँ (गुप्ता, 2024)। इसके अतिरिक्त अध्यापक को कक्षा में भाषा संबंधी अवरोधों को दूर करना भी आवश्यक हो जाता है, क्योंकि कक्षा में सांस्कृतिक विविधता के संदर्भ में भाषा संबंधी अवरोध प्रमुख चुनौतियों में से एक हैं, जो उन विद्यार्थियों के लिए शिक्षण में पूर्ण सहभागिता को कठिन बना सकते हैं, जिनकी भाषिक पृष्ठभूमि शिक्षण माध्यम से भिन्न होती है। जिसके लिए बातचीत करना एक सशक्त माध्यम होता है।

कहानी सुनना

कहानियाँ भारतीय ज्ञान परंपरा का एक अभिन्न हिस्सा हैं। छोटे बच्चों को कहानियाँ सुनना बहुत अच्छा लगता है। इसके माध्यम से उनमें सुनने, कल्पना करने तथा तर्क करने की क्षमताओं का विकास होता है। कहानियाँ बच्चों के लिए दुनिया की एक खिड़की की तरह होती हैं, जो उन्हें आकर्षित करती हैं, मजेदार होती हैं और कल्पना को बढ़ावा देती हैं। बच्चे इसमें रुचि लेते हैं, जिससे उनमें नैतिक मूल्यों, भावनात्मक समझ और जीवन कौशलों का विकास होता है। कहानियाँ सीखने का एक अच्छा माध्यम है, क्योंकि वे बच्चों को नए शब्द सिखाती हैं, उनकी शब्दावली का विस्तार करती हैं और वाक्य संरचना व समस्या सुलझाने के कौशल को बेहतर बनाती हैं। कहानियों के माध्यम से बच्चे सांस्कृतिक, सामाजिक और मानवीय विविधताओं से परिचित होते हैं, जिससे उनमें इनके प्रति जागरूकता पैदा होती है (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, पृ.सं. 96)। अतः अध्यापक के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे कक्षा में बच्चों को कहानियाँ सुनाकर उनमें विभिन्न क्षमताओं एवं कौशलों का विकास करें। कहानी को सुनाने के लिए अध्यापक पुस्तकों, कठपुतलियों, विभिन्न प्रकार के चित्र, मुद्रित फ्लैश काड्‌र्स, कहानी

चार्ट और पोस्टर आदि का सहारा ले सकते हैं। इसके अतिरिक्त बच्चों को कहानी सुनने के अलावा कहानी कहने का भी अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। बच्चे कक्षा में पहले से सुनी हुई या अपने द्वारा बनाई गई कहानी सुना सकते हैं अथवा अध्यापक कहानी सुनाना शुरू कर सकते हैं और बच्चों से उसे पूरा करने के लिए कह सकते हैं (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, पृ.सं. 94)।

खिलौने आधारित शिक्षा

छोटे बच्चे प्रत्यक्ष अनुभवों और वास्तविक वस्तुओं के माध्यम से बेहतर ढंग से सीखते हैं। अतः अध्यापक को अधिगम प्रक्रिया में मूर्त वस्तुओं जैसे स्थानीय खिलौनों आदि के माध्यम से बच्चों को सिखाने का प्रयास करना चाहिए। खिलौने आधारित शिक्षा खेल आधारित शिक्षणशास्त्र का एक जरूरी हिस्सा है। खिलौनों और खेलों से ऐसा वातावरण बनता है, जिसमें विद्यार्थी बिना किसी डर के बहुत खुशी और जिज्ञासा के साथ सीखता है (रॉय, सहरावत और चित्ररेखा, 2024)। खिलौने के माध्यम से बच्चे जोड़-तोड़, खोज और प्रयोग करना सीखते हैं, जिससे वातावरण में उनकी सक्रिय भागीदारी और उनमें गहन समझ विकसित होती है। खिलौने चाहे सरल हों या जटिल, इनके माध्यम से बच्चे अपनी कल्पनाशक्ति, समस्या-समाधान क्षमता, भाषा और गणितीय समझ को निखारते हैं। पारंपरिक खिलौने जैसे रिंग सेट पहेली, ढिंगली (कपास की गुड़िया), रसोई का सेट आदि बच्चों की रचनात्मकता और सामाजिक समझ को बढ़ावा देते हैं। इसके अतिरिक्त मिट्टी, रंग, गेंद, बीज, धागा आदि से बने खिलौने से बच्चों की रचनात्मकता, समूह में कार्य करने की क्षमता और आत्म-विश्वास विकसित होता है। इस प्रकार खिलौने बच्चों के संपूर्ण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये न केवल उनकी रचनात्मकता और कल्पनाशक्ति को प्रोत्साहित करते हैं, बल्कि बहुविषयक और अंतर्विषयक शिक्षण में भी सहायक होते हैं। खेल और खिलौनों के माध्यम से बच्चे गतिक-कौशलों तथा हाथ-आँख के समन्वय को मजबूत करते हैं। इसके साथ ही ये बच्चों के सामाजिक और भावात्मक विकास में भी योगदान प्रदान करते हैं (*टॉय बेस्ड पैडागॉजी : ए हैंडबुक— लर्निंग फॉर फन, जॉय एंड हॉलिस्टिक डेवलपमेंट पार्ट-I*, 2022)।

गीत और तुकबंदियाँ

बच्चों को गीत और तुकबंदियाँ गाना और संगीत पर नृत्य करना बहुत अच्छा लगता है। ये उनकी भाषा सीखने की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। गीतों के माध्यम से बच्चे न केवल आनंद की प्राप्ति करते हैं, बल्कि उनकी समझ और भावनात्मक जुड़ाव भी बढ़ता है। गीतों और तुकबंदियों के साथ शारीरिक गतिविधियों को जोड़ने से बच्चों में समन्वय, एकाग्रता और अनुशासन जैसे कौशल विकसित होते हैं। इसके अतिरिक्त ये बच्चों को भाषा के स्वाभाविक प्रवाह, उच्चारण, शब्दावली और संप्रेषण कौशल को भी बढ़ाने का अवसर देती हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है और वे समूह में सहभागिता करना सीखते हैं। अध्यापक जब बच्चों को स्वयं गाने, दोहराने और अभिनय करने का अवसर देते हैं तो उनकी रचनात्मकता और कल्पनाशक्ति का भी विकास होता है। इस प्रकार गीत और तुकबंदियाँ

बाल-शिक्षण में केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि बहुस्तरीय शिक्षा का प्रभावी माध्यम भी हैं जो बच्चों में भाषा, गणित, सामाजिक कौशल और भावनात्मक विकास में सहायक सिद्ध होते हैं।

संगीत और शारीरिक हलचल

संगीत सुनना बच्चों को बहुत आनंददायी लगता है। बच्चे अपनी दादी-नानी की लोरी सुनते हुए बड़े होते हैं। मस्तिष्क के विकास और सिनैप्टिक कनेक्शन (तंत्रिका कोशिकाओं के मध्य का संबंध या जुड़ाव जो संकेतों के संचार के लिए महत्वपूर्ण होता है) के निर्माण के लिए संगीत एक प्रभावशाली उद्दीपन है। अतः अध्यापकों द्वारा बच्चों को सरल वाद्य-यंत्र बजाने और गायन के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। हमारे आस-पास संगीत के बहुत से स्त्रोत हो सकते हैं, जैसे खेतों में गाते किसान, मधुमक्खियों की भिनभिनाहट, कोयल की कूक या बारिश की गड़गड़ाहट आदि (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर, 2022 पृ.सं. 101)।

संगीत और शरीर की गति न केवल बच्चों के लिए मनोरंजक होती हैं, बल्कि वे उनकी रचनात्मकता, भावनात्मक अभिव्यक्ति और सामाजिक सहभागिता को भी प्रोत्साहित करते हैं। बच्चों को ताल, लय और ध्वनि की पहचान सहज रूप से होती है। शारीरिक गतिविधियाँ, जैसे— ताली बजाना, पाँव पटकना, घूमना, कूदना आदि बच्चों के गतिक विकास के लिए भी उपयोगी होती हैं। इस तरह की गतिविधियाँ बच्चों को आत्म-अनुशासन, एकाग्रता और तालमेल सिखाने में मदद करती हैं। अतः अध्यापक यदि संगीत और शारीरिक गतिविधियों को शिक्षण में रचनात्मक तरीके से शामिल करें, तो इससे बच्चों की सीखने की प्रक्रिया अधिक आनंददायक, सहभागितापूर्ण और प्रभावशाली बन सकती है। साथ ही यह विविध संस्कृतियों और भाषाओं के प्रति बच्चों में सम्मान और समझ विकसित करने का माध्यम भी बनती है। कुल मिलाकर, संगीत और शारीरिक हलचल न केवल शिक्षा को रोचक बनाते हैं, बल्कि बच्चों के समग्र विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कला और शिल्प

प्रारंभिक कक्षाओं मे कला एवं शिल्प का समावेशन अधिगम प्रक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा है, क्योंकि बच्चों को रंगों के साथ खेलने और अपनी रुचि के अनुसार चीजों को बनाने में आनंद की प्राप्ति होती है। ये बच्चों को अपने विचारों और अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम उपलब्ध करते हैं। कला एवं शिल्प आधारित विभिन्न गतिविधियाँ, जैसे— चित्रकारी, रंगाई, मिट्टी के बर्तन बनाना तथा विभिन्न प्रकार की स्थानीय सामग्रियों के माध्यम से नई वस्तुओं को बनाना आदि न केवल बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ावा देती हैं, बल्कि उनमें विभिन्न कौशलों को भी विकसित करती हैं। इस प्रकार ये गतिविधियाँ शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में कला समेकित शिक्षा को बढ़ावा देती हैं। शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में कला, जैसे— कागज शिल्प, मुखौटा, कठपुतली तथा मिट्टी के बर्तन आदि के जुड़ाव से विद्यार्थी मनोरंजक ढंग से, सामूहिक रूप में अधिक जुड़ाव के साथ नई अवधारणाओं को सीखते हैं वहीं अध्यापक विद्यार्थियों में आपसी जुड़ाव, सृजनात्मकता तथा उच्च प्रतिधारण जैसे

महत्वपूर्ण कौशलों का विकास कर सकते हैं (यादव, 2024)। इस प्रकार वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कला और शिल्प को बच्चों के समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण माना गया है। अतः अध्यापक को बच्चों की कलात्मक अभिव्यक्ति की प्रशंसा करनी चाहिए तथा एक ऐसे समावेशी वातावरण का निर्माण करना चाहिए जो कक्षा-कक्ष में बच्चों को उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए स्वतंत्रता प्रदान करे।

इनडोर खेल

जिस तरह शरीर को स्वस्थ रखने के लिए शारीरिक व्यायाम जरूरी है, ठीक उसी तरह मानसिक रूप से स्वयं को स्वस्थ रखने के लिए मानसिक व्यायाम भी जरूरी है। बच्चों के विकास के शुरुआती चरण में उनके समग्र विकास हेतु 'इंडोर खेल' महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये खेल बच्चों में समस्या-समाधान, तार्किक सोच और सहयोग जैसे महत्वपूर्ण कौशलों को विकसित करने में सहायता प्रदान करते हैं। कुछ प्रमुख खेल, जैसे— जिग्सॉ पहेलियाँ बच्चों में कल्पनात्मक तर्क विकसित करने में मदद करती हैं; रणनीतिक खेल जैसे शतरंज बच्चों में रणनीतिक सोच और समस्या समाधान के कौशल को विकसित करते हैं तथा चौपड़, साँप-सीढ़ी और लूडो जैसे खेल गिनती, रणनीति, सहयोग, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा एवं सहपाठियों के साथ सहयोग बढ़ाने में सहायता प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त शब्द और तर्क पहेलियाँ एवं समस्या-समाधान जैसी गतिविधियाँ जिनमें तर्क, पैटर्न, रणनीति और अंकगणितीय कौशल शामिल हैं, बच्चों में तार्किक निर्णय और रचनात्मकता के लिए आवश्यक कौशल को विकसित करने में सहायता प्रदान करती हैं। अतः इन पहेलियों और समस्या-समाधान आधारित गतिविधियों को व्यापक रूप से कक्षा-कक्ष की अधिगम प्रक्रिया में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

बाहरी मैदानी खेल

छोटे बच्चे विभिन्न प्रकार की शारीरिक गतिविधियाँ करते हैं, जैसे— चलना, दौड़ना, कूदना तथा पेड़ों पर चढ़ना आदि। बचपन में बच्चों की ये गतिविधियाँ उनके शारीरिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक होती हैं। ये गतिविधियाँ बच्चों को स्थूल गतिक कौशलों को विकसित करने में सहायता प्रदान करती हैं। विभिन्न प्रकार के बाहरी मैदानी खेलों के माध्यम से इन सभी गतिविधियों को प्राथमिकता दी जा सकती है। खेल खेलने से बच्चों के शरीर के सभी अंग सक्रिय रूप से क्रियाशील होते हैं जिससे पूरे शरीर का व्यायाम हो जाता है और उनके शरीर की उपापचयी क्रियाएँ भी सुचारु रूप से कार्य करने लगती हैं (सिंह, पटेल और राव, 2023)। अतः अध्यापक विभिन्न प्रकार के खेलों, जैसे— रस्सी-कूद, पकड़म-पकड़ाई, पिट्ठू, आँख-मिचौली और लुक-अप तथा लुक-डाउन आदि खेलों के माध्यम से विभिन्न प्रकार की शारीरिक गतिविधियों को प्रोत्साहित कर सकते हैं। जिससे बच्चों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास होता है। इसके अतिरिक्त समूह में खेलने से वे दूसरों के साथ मिलकर काम करना सीखते हैं जो उनके सामाजिक सामंजस्य और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ावा देता है।

प्रकृति के साथ समय बिताना

प्राचीन भारतीय ग्रंथों में कहा गया है कि हमारा शरीर पंचभूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) से

मिलकर बना होता है। पंचभूत हमारे शरीर के विभिन्न हिस्सों में प्रकट होते हैं। अतः बाल्यावस्था में बच्चों का इनसे प्रत्यक्ष संपर्क होना आवश्यक होता है, ताकि वे इन तत्वों के साथ गहरे संबंध का अनुभव कर सकें। इसके लिए बच्चों का प्रकृति के साथ जुड़ाव आवश्यक हो जाता है। पेड़-पौधों, पक्षियों और जानवरों के साथ समय बिताना या चारों ओर से घिरी प्रकृति में सिर्फ शांत रहना पर्यावरण के लिए जीवन शैली का आधार विकसित कर सकता है (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, पृ.सं. 112)। प्रकृति के साथ जुड़े रहने से बच्चों में अवलोकन, अन्वेषण तथा प्रश्न करने की क्षमता का विकास होता है तथा नई चीजों को सीखने के प्रति जिज्ञासा को प्रोत्साहन मिलता है। अतः अध्यापकों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे बच्चों को प्रकृति का प्रत्यक्ष अनुभव कराकर सीखने के लिए प्रेरित करें। यह न केवल बच्चों में नई चीजों को सीखने के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करेगा, बल्कि उन्हें पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान देने के योग्य बनाएगा।

क्षेत्र-भ्रमण

क्षेत्र भ्रमण बच्चों को कक्षा की चारदीवारी से बाहर निकालकर वास्तविक दुनिया का अनुभव करने का अवसर प्रदान करता है, जिससे उनकी समझ और ज्ञान में वृद्धि होती है। जब बच्चे किसी नई जगह पर जाते हैं तो वे विभिन्न चीजों को देखते, सुनते और महसूस करते हैं। यह बच्चों में अवलोकन कौशल को बढ़ाता है और उन्हें अपने आस-पास की दुनिया के बारे में जानने के लिए जिज्ञासु भी बनाना है। उदाहरण के लिए, किसी बगीचे की यात्रा उन्हें पौधों, फूलों और कीड़ों के बारे में जानने का अवसर प्रदान कर सकती है या किसी चिड़ियाघर की यात्रा उन्हें विभिन्न जानवरों और उनके आवासों के बारे में जानकारी प्रदान कर सकती है। क्षेत्र भ्रमण बच्चों को नए अनुभव प्रदान करके उनमें आत्मविश्वास पैदा करता है और उन्हें विभिन्न संस्कृतियों और जीवनशैली से परिचित कराता है। इस प्रकार क्षेत्र-भ्रमण के माध्यम से सीखना और सिखाना दोनों ही आनंदपूर्ण होता है। इसमें बच्चे भी पूर्ण रूप से सहभागी होते हैं और बच्चों के सीखने का स्तर स्थायी होता है (कुमार, 2022)। अतः सीखने की प्रक्रिया के एक हिस्से के रूप में छोटी, स्थानीय क्षेत्र अध्ययन यात्राएँ कक्षा में बच्चों द्वारा प्राप्त ज्ञान को पुख्ता करती हैं और उन्हें ज्यादा सवाल तथा पहले से ज्ञात चीजों के साथ संबंध बनाने के लिए प्रेरित करती हैं। इन अनुभवों के माध्यम से बच्चे खुद का प्रबंधन करना और दूसरों के साथ रहना सीखते हैं।

परिणाम, व्याख्या एवं निष्कर्ष

खेल के माध्यम से सीखना प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की आधारशिला है, जिसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 ने विशेष महत्व प्रदान किया गया है। ये दस्तावेज इस बात पर बल देते हैं कि शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित न होकर बच्चों की रुचि, अनुभवजन्य और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों के अनुरूप होनी चाहिए। बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को स्वाभाविक, आनंददायक और सहभागितापूर्ण बनाने के लिए बातचीत, कहानी, खिलौने, गीत-संगीत, शारीरिक गतिविधियाँ, कला एवं शिल्प, इनडोर-आउटडोर खेल, प्रकृति से जुड़ाव

और क्षेत्र-भ्रमण जैसे विविध विधाओं को शैक्षिक ढाँचे में समाहित किया जाना चाहिए। ये गतिविधि आधारित अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग है जो कि प्रारंभिक कक्षाओं में बनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की दक्षता के साथ-साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लक्ष्य को प्रतिपादित करते हैं (गौतम, 2022)। इन विधियों के माध्यम से शिक्षण अधिगम न केवल आनंददायक बनता है, बल्कि ये बच्चों में भाषा विकास, सामाजिकता, समस्या-समाधान, संवेदनशीलता, रचनात्मकता तथा आत्म-अभिव्यक्ति जैसे आवश्यक जीवन-कौशलों को भी पोषित करती हैं। इन विधियों के माध्यम से बच्चों को उनके परिवेश से जोड़ने, सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी कराने तथा बहुविषयी एवं अंतर्विषयी शिक्षण के अवसर प्रदान करने का मार्ग प्रशस्त होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी शिक्षण को बाल केंद्रित, अनुभवात्मक और समावेशी बनाने के लिए अधिगम प्रक्रिया को खेल के साथ एकीकृत करके सिखाने पर जोर दिया गया है जिससे कि विद्यार्थियों में अधिगम को प्रभावी व रुचिकर बनाने के साथ साथ स्व-अनशुासन, स्व-निर्देशन, कुशल नागरिकता तथा समूह के साथ मिलकर कार्य करने की भावना जैसे कौशलों का विकास हो सके (सिंह, पटेल और राव, 2023)।

इस प्रकार, खेल के माध्यम से सीखना केवल बाल सुलभ अधिगम नहीं, बल्कि वह शिक्षण दर्शन है जो भारतीय ज्ञान-परंपरा, समकालीन शिक्षा नीति तथा समावेशी विकास की मूल अवधारणाओं को एक साथ समेटे हुए है। इसे बुनियादी स्तर की शिक्षा में प्रभावी रूप से लागू कर, हम एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण कर सकते हैं जो न केवल ज्ञानवान होगी बल्कि संवेदनशील, सक्षम और रचनात्मक भी होगी।

संदर्भ

ओड़, एल.के. 2021. *शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि*. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर.

कुमार, ए. 2022. प्राथमिक स्तर के शिक्षण-अधिगम में क्षेत्रीय भ्रमण की भूमिका. *प्राथमिक शिक्षक*. 46(4), पृ.सं. 12–21. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

गंगवार, एस. और ए. कुमार. 2022. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 : एक शिक्षणशास्त्रीय विश्लेषण अधिगम. 33, पृ.सं. 64 –76.

गुप्ता, डी.के. 2024. कक्षा में बातचीत का शिक्षणशास्त्रीय महत्व. *प्राथमिक शिक्षक*. 48(2), पृ.सं. 69–75. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

गौतम, डी.डी. 2022. बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की संप्राप्ति में गतिविधि आधारित अधिगम की उपादेयता. *प्राथमिक शिक्षक*. 46(2), पृ.सं. 85–95. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

डिपार्टमेंट ऑफ स्कूल एजुकेशन एंड लिटरेसी. 2022. *टॉय बेस्ड पैडागॉजी : अ हैंडबुक— लर्निंग फॉर फन, जॉय एंड हॉलिस्टिक डेवलपमेंट पार्ट-I*. डिपार्टमेंट ऑफ स्कूल एजुकेशन एंड लिटरेसी. https://ncert.nic.in/pdf/notice/toy_based_pedagogy.pdf

तेवतिया, ए.के. 2023. खेल की शिक्षा और कक्षा में खेलना. *प्राथमिक शिक्षक*. 47(3), पृ.सं. 5–13. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

दत्ता, जे. तथा जे. दोवारह. 2025. एजुकेशनल एंड सोशल इनक्लूजन ऑफ लर्नर्स विद डाइवर्स लर्निंग नीड्स इन द लाइट ऑफ एन.ई.पी. 2020. *समिखिया: अ मल्टिडिसिप्लिनरी रिसर्च जर्नल*. 4(2), पृ.सं. 1–13.

मिनिस्ट्री ऑफ लॉ एंड जस्टिस (लेजिस्लेटिव डिपार्टमेंट). 2009. *द राइट ऑफ चिल्ड्रेन टू फ्री एंड कम्पलसरी एजुकेशन एक्ट 2009*. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/upload_document/rte.pdf

मेइती ए.पी. और अन्य. 2024. प्रैक्टिकल पैडागॉजिकल अप्रोचेज़ : इंटीग्रेटिंग प्ले-बेस्ड एंड एक्सपीरिएंशल लर्निंग ऐट प्री-प्राइमरी एजुकेशन ऐज पर एन.ई.पी. 2020 एंड एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022. *एडुमेनिया : एन इंटरनेशनल मल्टीडिसिप्लिनरी जर्नल*. 2(4), पृ.सं. 174–193.

यादव, पी. 2023. खेल-खेल में पूर्व-प्राथमिक शैक्षिक क्रियाओं का संचालन. *प्राथमिक शिक्षक*. 47(1), पृ.सं. 15–24. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2024. विद्यालयी शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए कला समेकित शिक्षा. *प्राथमिक शिक्षक*. 48(1), पृ.सं. 78–90. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

रॉय, एम.एम., एम. सहरावत और चित्ररेखा. 2024. स्वदेशी खेल-खिलौनों के माध्यम से अधिगम की संप्राप्ति एक प्रायोगिक अध्ययन. *प्राथमिक शिक्षक*. 48(2), पृ.सं. 17–25. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 2020. *इन्क्लूजन इन एजुकेशन— अ मैनुअल फॉर स्कूल मैनेजमेंट कमेटी*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/announcement/Inclusion_in_Eduction.pdf

———. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://scert.cg.gov.in/pdf/ncf-2022/NCF-FS-Hindi-Ver23Dec22.pdf

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nep_update/NEP_final_HI_0.pdf

सिंह, एस.एन., एन. पटेल और जी. राव. 2023. खेल गतिविधियों का विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर प्रभाव. *प्राथमिक शिक्षक*. 47(3), पृ.सं. 14–21. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

श्रीवास्तव, आर. और बी. आनंद. 2022. *मनोविज्ञान, शिक्षा तथा अन्य सामाजिक विज्ञानों में अनुसंधान विधियाँ*. मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, नई दिल्ली.